

साहित्यक छत्तीसगढ़ की वितरण प्रणाली: डिजिटल व्यू

कनिका रॉय, समाजशास्त्र विभाग, ओ पी जे एस विश्विधालय, चूरू (राजस्थान)

सारांश

छत्तीसगढ़ की साहित्यिक परंपरा अपनी लोकसंस्कृति, जनभाषाओं, लोकगीतों, लोककथाओं, आदिवासी जीवन-दृष्टि और समकालीन रचनात्मक अभिव्यक्तियों के कारण विशिष्ट पहचान रखती है। साहित्य के सृजन के साथ-साथ उसकी उपलब्धता और पाठकों तक पहुंच उसकी निरंतरता के लिए महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत अध्ययन में साहित्यिक छत्तीसगढ़ की वितरण प्रणाली को डिजिटल दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया गया है। पारंपरिक रूप से छत्तीसगढ़ी साहित्य का प्रसार पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, साहित्यिक गोष्ठियों, पुस्तकालयों और मौखिक परंपराओं के माध्यम से होता रहा है। डिजिटल युग में वेबसाइट, ई-पुस्तक, डिजिटल पुस्तकालय, सोशल मीडिया, ब्लॉग, ऑनलाइन पत्रिकाएं, पॉडकास्ट और वीडियो प्लेटफॉर्म साहित्य के वितरण के नए माध्यम बन रहे हैं। डिजिटल माध्यमों के कारण स्थानीय साहित्यकारों और क्षेत्रीय भाषाओं की रचनाओं को व्यापक राष्ट्रीय एवं वैश्विक पाठक वर्ग तक पहुंचाने की संभावनाएं बढ़ी हैं। साथ ही, डिजिटल अभिलेखीकरण के माध्यम से लोकसाहित्य, दुर्लभ पांडुलिपियों, मौखिक परंपराओं और स्थानीय साहित्यिक सामग्री को संरक्षित किया जा सकता है। हालांकि, डिजिटल विभाजन, तकनीकी संसाधनों की कमी, कॉपीराइट, सामग्री की प्रामाणिकता और स्थानीय भाषाओं के लिए उपयुक्त डिजिटल मंचों का अभाव जैसी चुनौतियां भी मौजूद हैं। अध्ययन इस बात पर बल देता है कि पारंपरिक वितरण व्यवस्था और डिजिटल तकनीक के समन्वय से साहित्यिक छत्तीसगढ़ को अधिक सुलभ, संरक्षित और व्यापक बनाया जा सकता है।

मुख्य शब्द: साहित्यिक छत्तीसगढ़, डिजिटल माध्यम, वितरण प्रणाली, छत्तीसगढ़ी साहित्य, लोकसाहित्य, डिजिटल अभिलेखीकरण, ई-पुस्तक, सोशल मीडिया, साहित्य संरक्षण, डिजिटल संस्कृति।

